



भा.वा.अ.शि.प.- हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान, शिमला, हिमाचल प्रदेश; मुंगेर विश्वविद्यालय, बिहार तथा रबर अनुसंधान संस्थान (RRII), कोट्टायम, केरल के मध्य त्रि-पक्षीय समझौता ज्ञापन (MoU) पर रिपोर्ट

भा.वा.अ.शि.प.- हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान, शिमला, हिमाचल प्रदेश द्वारा मुंगेर विश्वविद्यालय, बिहार तथा रबर अनुसंधान संस्थान (RRII), कोट्टायम, केरल के साथ वैकल्पिक प्राकृतिक रबर उत्पादक पौधों के क्षेत्र में संयुक्त अनुसंधान एवं विकास गतिविधियों को बढ़ावा देने हेतु दिनांक 27.01.2026 को भा.वा.अ.शि.प.- हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान, शिमला में त्रि-पक्षीय समझौता ज्ञापन (MoU) किया गया।

इस समझौता ज्ञापन का उद्देश्य तीनों संस्थानों के मध्य वैज्ञानिक सहयोग को सुदृढ़ करना है, ताकि गुणवत्तापूर्ण अनुसंधान, क्षमता निर्माण तथा वैज्ञानिक आंकड़ों का सृजन किया जा सके, जो विशेष रूप से भारत के शीत एवं सीमांत क्षेत्रों में सतत आजीविका के अवसरों को समर्थन प्रदान कर सके। यह सहयोग मुख्य रूप से हिमाचल प्रदेश, लद्दाख के शीत/मरुस्थलीय क्षेत्रों एवं बिहार में “रूसी डैंडेलियन” (*Taraxacum kok-saghyz*) तथा “ग्वायुले” (*Parthenium argentatum*) जैसी वैकल्पिक रबर उत्पादक फसलों की खेती की व्यवहार्यता के आकलन पर केंद्रित है।

यह समझौता ज्ञापन मुंगेर विश्वविद्यालय, बिहार की ओर से इसके कुलपति प्रो. (डॉ.) संजय कुमार; भा.वा.अ.शि.प.- हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान, शिमला की ओर से निदेशक डॉ. मनीषा थपलियाल; तथा रबर अनुसंधान संस्थान (RRII) की ओर से इसके कार्यकारी निदेशक श्री एम. वसंतहागेसन द्वारा निष्पादित किया गया। इस दौरान रबर अनुसंधान संस्थान की ओर से डॉ. मोहम्मद सादिक तथा मुंगेर विश्वविद्यालय की ओर से डॉ. संदीप कुमार टाटा भी उपस्थित रहे।

इस समझौता ज्ञापन के अंतर्गत सहयोगी संस्थानों द्वारा संयुक्त रूप से व्यवस्थित क्षेत्र-आधारित व्यवहार्यता अध्ययन करना, प्रायोगिक रोपण स्थापित करना, फसल वृद्धि एवं लेटेक्स उत्पादन की निगरानी करना तथा विभिन्न कृषि-जलवायु परिस्थितियों में इन वैकल्पिक फसलों की उपयुक्तता का मूल्यांकन करने हेतु वैज्ञानिक रूप से प्रमाणित आंकड़े तैयार करने पर सहमति व्यक्त की गई है। यह समझौता तकनीकी विशेषज्ञता के आदान-प्रदान, मानव संसाधन प्रशिक्षण तथा दीर्घकालिक अनुसंधान सहयोग हेतु संस्थागत समर्थन का भी प्रावधान करता है।


